International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 122-125

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 122-125
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-01-2017
Accepted: 26-02-2017

उमेश पौडेल
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,जम्मू वि॰वि॰, जम्मू।

Correspondence
उमेश पौडेल
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग,जम्मू वि॰वि॰, जम्मू।

व्याकरणशास्त्र में काशिकावृत्ति का स्थान एवं वैशिष्ट्य

उमेश पौडेल

सारांश
संस्कृत वाङ्मय में ''व्याकरणशास्त्र'' का अपना विशिष्ट स्थान है। व्याकरण वैदिक काल में ही एक स्वतन्त्र विषय बन चुका था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के बहुत से मन्त्रों में शब्दों की व्युत्पत्ति धातु तथा अर्थ के साथ की गई है। वेदों की सुरक्षा के लिए प्राचीन काल से ही व्याकरण की गणना षड् वेदाङ्गों में की गई है। न केवल गणना की गई है अपितु – मुखं व्याकरणं स्मृतम् [1] कहकर इसे सर्वश्रेष्ठ अंग की संज्ञा दी गई है। नाम, आख्यात, उपसर्ग तथा निपात–व्याकरण ये चार आधारभूत तथ्य यास्क (ई.पू. लगभग 700) के पूर्व ही व्याकरण में स्थान पा चुके थे। सम्प्रति संस्कृत व्याकरण के अध्ययन की दो शाखाएं प्रचलित हैं नव्य व्याकरण तथा प्राचीन व्याकरण । काशिकावृत्ति प्राचीन व्याकरण शाखा का ग्रन्थ है। इसके सम्मिलित लेखक जयादित्य और वामन हैं। यह पाणिनीय अष्टाध्यायी पर सातवीं शताब्दी ईस्वी में रची गयी प्रसिद्ध रचना है। इसमें बहुत से सूत्रों की वृत्तियां और उनके उदाहरण पूर्वकालिक आचार्यों के वृत्ति ग्रंथों से भी दिए गए हैं। केवल महाभाष्य का ही अनुसरण न कर अनेक स्थलों पर महाभाष्य से भिन्न मत का भी प्रतिपादन हुआ है। काशिका में उीत वृत्तियों से प्राचीन वृत्तिकारों के मत जानने में बडी सहायता मिलती है, अन्यथा वे विलुप्त ही हो जाते। इसी प्रकार इसमें दिए उदाहरणों से कुछ ऐसे ऐतिहासिक तथ्यों की समुपलब्धि हुई है जो अन्यत्र दुष्प्राप्य थे। इस ग्रन्थ की अनेक विशेषताओं में एक विशेषता यह भी है कि इसमें गणपाठ भी दिया हुआ है जो प्राचीन वृत्ति ग्रन्थों में नहीं मिलता। अतः हम कह सकते हैं कि व्याकरणशास्त्र में काशिका का सर्वप्रमुख स्थान है।

कूट शब्दः ब्याकरणशास्त्र, काशिका, वामन–जयादित्य, इष्ट्युपसंख्यान, उक्तानुक्तदुरुक्त, वार्तिक ।

प्रस्तावना

व्याकरणशास्त्र का परिचय

यद्यपि व्याकरणशास्त्र का इतिहास बृहद् है किन्तु महामुनि पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी ही इसका केन्द्र बिन्दु हैं। भारतीय वाङ्मय के अध्ययन–अनुशीलन से विदित होता है कि ब्रह्मा से लेकर इन्द्रादि देवताओं और ज्ञानवंत ऋषि–महर्षियों के समय तक व्याकरणशास्त्र की विभिन्न वीथियां प्रकाश में आ चुकी थीं। गार्ग्य, गालव, शाकटायन, शाकल्य आदि भाषाशास्त्रियों द्वारा प्रवर्तित होकर व्याकरणशास्त्र की यह महान् थाती पाणिनि, कात्यायन और पतजलि के हाथों में आयी। भाषा का जो बृहद् रूप तत्कालीन भारत की कोटि–कोटि जनता के कण्ठ में समा चुका था, मुनित्रय ने उसको अपनी महान् कृतियों में बांधा। तत्पश्चात् संस्कृत के शताधिक वैयाकरणों ने वार्त्तिक, वृत्ति, व्याख्या और टीकाओं के द्वारा व्याकरण–ज्ञान की इस परम्परा को आगे बढाया।

व्याकरणशास्त्र में काशिका का स्थान

यद्यपि पाणिनि की अष्टाध्यायी पर अनेक प्राचीन आचार्यों ने वृत्तिग्रन्थों की रचना की थी किन्तु वर्तमान समय में एक मात्र वृत्ति ग्रन्थ प्राप्त है और वह काशिका वृत्ति है। पाणिनीय व्याकरण–परम्परा में पातञ्जलमहाभाष्य के पश्चात् काशिकावृत्ति ही एक ऐसा ग्रन्थरत्न है जिसे सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रमाणिक कह सकते हैं। जयादित्य और वामन इन दोनों विद्वानों ने काशिकावृत्ति के रूप में पाणिनीय व्याकरण–परम्परा की रक्षा अतीव कौशल से की है। व्याकरणशास्त्र के क्षेत्र में ''काशिका'' का मौलिक महत्त्व है और यही कारण है कि अनेक वैयाकरणों ने उस पर व्याख्याएं लिखकर उसकी उपयोगिता एवं लोकप्रियता को सिद्ध किया है। काशिकाकार का मुख्य उद्देश्य पाणिनि की प्रक्रिया को समझाना है। इसका वैशिष्ट्य यही है कि इसमें प्रत्येक पाणिनीय सूत्रों के साथ वार्त्तिकों की भी व्याख्या की गई है। काशिकाकार ने पाणिनीय सूत्रों की व्याख्या करते समय पाणिनीय से लेकर पतजलि तक फैली अविच्छिन्न व्याकरण परम्परा के सारभूत तत्त्वों को भी काशिका में समाविष्ट कर लिया है।

इस वृत्ति की मुख्य विशेषता इसमें वार्त्तिकों के पूर्ण स्वरूप का उपलब्ध होना है। बहुत से वार्त्तिक, जो भाष्य में नहीं हैं वे भी काशिका में उपलब्ध होते हैं। शैली की दृष्टि से काशिका–वृत्ति का महत्त्व अन्य प्रक्रिया ग्रन्थों से अधिक है। काशिकाकार की भाषा शैली बहुत ही सरल, मञ्जुल, सुबोध, सुगम, प्रवाह युक्त तथा बोधगम्य है। पहले सूत्र का स्पष्टीकरण है, फिर सूत्रार्थ का स्पष्टीकरण है, फिर उदाहरण है, तत्पश्चात् प्रत्युदाहरण है, अन्त में वार्त्तिक तथा अन्य आचार्यों के मतों का उल्लेख भी है।

काशिकावृत्ति शब्द की व्युत्पत्ति एवं काशिका का नामकरण

काशिका एक वृत्ति ग्रन्थ है। अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में **''व्युत्पन्नरूप** सिद्धवृत्तिरियं काशिकानाम'' [2] कहकर काशिकार ने स्वयं उसे ''काशिकावृत्ति'' नाम दिया है। 'वृत्ति' शब्द 'वृतु वर्तने' धातु से 'स्त्रियां क्तिन्' [3] सूत्र से 'क्तिन्' प्रत्यय द्वारा निष्पन्न होता है। काशिका विवरण पंजिका (न्यास) के कर्त्ता जिनेन्द्र बुद्धि ने काशिकाकार द्वारा प्रयुक्त 'वृत्तिः' पद की व्याख्या 'पाणिनि प्रणीतानां सूत्राणां विवरणं वृत्तिः' इस प्रकार की है। [4] पदमंजरीकार हरदत्त ने 'सूत्रार्थ प्रधानो ग्रन्थो वृत्तिः' [5] कहकर सूत्रार्थ प्रधान ग्रन्थ को 'वृत्ति' कहा है। काशिका भी सूत्रार्थ प्रधान ग्रन्थ है अतः इसके लिए 'वृत्ति' शब्द सर्वथा उपयुक्त है। काश्यादिभ्यष्ठञिठौ [6] सूत्र द्वारा काशि शब्द से 'ञिठ' प्रत्यय करने पर काशिका शब्द निष्पन्न होता है। यह सूत्र 'भव' (होना) अधिकार में है। सम्भवतः हरदत्त मिश्र ने इसी आधार पर काशिका की रचना काशी में स्वीकार करते हुए लिखा है –''काशिकेति देशतोऽभिधानम्''। हरदत्त का अनुगमन करते हुए प्रो. विन्टरनित्स, प्रो. श्रीशचन्द्र चक्रवर्ति, प्रो. दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, पं. युधिष्ठिर मीमांसक आदि विद्वानों ने भी काशिका की रचना वाराणसी में स्वीकार की है। [7] इस प्रकार काशी तथा काशिका में श्रुतिसाम्य होने का कारण ही विद्वत्परम्परा काशिका की रचना का सम्बन्ध काशी से जोडती रही है। स्वयं काशिकार ने प्रारम्भिक मंगलाचरण श्लोक में काशिका के लिए विवृतगूढसूत्रार्थाः लिखा है जिसका अभिप्राय काशिका में पाणिनीय सूत्रों के गूढ अर्थों को भली–भांति स्पष्ट करना है। [8] अतः काशिकाकार की भावनानुसार यही मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि उन्होंने सूत्रार्थ की सुप्रकाशक होने के कारण ही इसे ''काशिका'' नाम दिया है न कि देश आदि अन्य किसी आधार पर। सृष्टिधराचार्य ने भी लिखा है कि काशयति प्रकाशयति सूत्रार्थमिति काशिका अर्थात् सूत्रों के अर्थों पर प्रकाश डालने के कारण ही इस ग्रन्थ का नामकरण ''काशिका'' किया गया है। [9]

काशिका के प्रणेता

यह काशिका का वैशिष्ट्य ही है कि यह वृत्ति आज भी सम्पूर्ण रूप में उपलब्ध है। साथ ही यह बात खेदास्पद भी है कि इस महत्त्वपूर्ण वृत्ति के कर्त्ता, उनका काल, धर्म तथा अन्य कृतियों को लेकर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। कुछ विद्वानों का मानना है कि जयादित्य वामन ने अलग–अलग काशिका की रचना की थी तो कुछ विद्वानों का मानना है कि दोंनों का सम्मिलित ग्रन्थ–रत्न है ''काशिका''। बहिरंग–अन्तरंग प्रमाणों के अनुसार जो तथ्य सामने आते हैं वे इस प्रकार हैं –

क. बहिरंग प्रमाण

आचार्य रघुवीर वेदालंकार के अनुसार– ''भाषावृत्ति के व्याख्याता सृष्टिधराचार्य ने काशिका के

रचयिता के रूप में जयादित्य का ही स्मरण किया है। पाश्चात्य विद्वानों में डा. वेबर, प्रो. मोनियर विलियम काशिका वृत्ति का प्रणेता वामन को मानते हैं। प्रो. मैक्समूलर जयादित्य तथा वामन दो व्यक्तियों को काशिका के रचयिता मानने के पक्ष में हैं। भट्टोजिदीक्षित ने वामन एवं जयादित्य दोनों को ही काशिका का रचयिता स्वीकार किया है। पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने विश्रान्तधर संज्ञक जैन व्याकरण का कर्त्ता वामन, अलंकारशास्त्र का रचयिता वामन तथा लिंगानुशासन का निर्माता वामन, सभी को भिन्न–भिन्न व्यक्ति स्वीकार करके काशिकाकार को इन सबसे पृथक् चतुर्थ वामन माना है। [10]

''परिभाषावृत्ति'' के सम्पादक प्रो. दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य ने जयादित्य तथा वामन दोनों को काशिका का रचयिता स्वीकार करते हुए जयादित्य की किसी सम्पूर्ण काशिकावृत्ति का उल्लेख किया है। इन्होंने वामन को केवल अन्तिम तीन अध्याय का लेखक स्वीकार किया है। इस प्रकार वर्तमान काशिकावृत्ति वामन–जयादित्य दोनों की सम्मिलित कृति मानी जा सकती है। [11]

ख. अन्तरंग प्रमाण

दो विभिन्न लेखकों की रचना होने पर भी जिस प्रकार कादम्बरी में आदि से अन्त तक एक ही शैली अपनाई गई है, उसी प्रकार वर्तमान में उपलब्ध काशिका में भी आदि से लेकर अन्त तक एक ही प्रकार की शैली दृग्गोचर होती है। काशिका के अध्ययन से उसका अध्येता इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह दो विभिन्न व्यक्तियों की वृत्तियों का अध्ययन कर रहा है। काशिका के अध्ययन से जो कुछ तथ्य सामने आते हैं वे निम्नलिखित हैं –

1. कृत्यतुल्याख्या अजात्याख [12] इस सूत्र पर काशिका में ''तुल्याख्या'' के ''तुल्यश्वेतः'', ''तुल्यमहान्'', ''सदृशश्वेतः'', ''सदृशमहान्'' ये चार उदाहरण दिये गये हैं, ध्यातव्य है कि यह सूत्र द्वितीय अध्याय का है। परन्तु ''तत्पुरुषे.....कृत्याः'' [13] सूत्र पर तुल्यार्थ के नौ उदाहरण दिए गए हैं जिनमें चार उदाहरण ''कृत्यतुल्याख्या अजात्या'' सूत्र के ही हैं तथा पांच उदाहरण नये हैं यथा – तुल्यलोहितः। सदृक्च्छवेतः। सदृग्लोहितः। सदृशलोहितः। सदृग्महान्। काशिकाकार ''तत्पुरुषे.....कृत्याः'' सूत्र पर ही एते ''कृत्यतुल्याख्या अजात्येति कर्मधारयः'' कहकर ''कृत्यतुल्याख्या अजात्या'' सूत्र का स्मरण भी कर रहे हैं। स्पष्ट है कि यहां दोनों स्थलों पर उदाहरण देने वाले व्यक्ति भिन्न–भिन्न हैं।
2. इसी ''तत्पुरुषे.....कृत्याः'' सूत्र पर सप्तमी के उदाहरण ''अक्षशौण्डः'' तथा ''पानशौण्डः'' दिये हैं। जबकि ''सप्तमी शौण्डैः'' [14] सूत्र पर केवल ''अक्षशौण्डः'' एक ही उदाहरण है। इससे भी ज्ञात होता है कि द्वितीय अध्याय के कर्त्ता तथा छठे अध्याय के कर्त्ता अलग–अलग हैं।
3. परिप्रत्युपाया वर्ज्यमानाहोरात्रावयवेषु [15] सूत्र पर 'अप' के तीन उदाहरण– 'अप अपत्रिगर्तं वृष्टो देवः', 'अपसौवीरम्' तथा 'अपसार्वसेनि' दिये गये हैं। जबकि सूत्र संख्या ''विभाषा'' [16] पर इनमें से केवल प्रथम, 'अप अपत्रिगर्तं वृष्टो देवः', उदाहरण ही दिया है अन्तिम दो नहीं दिये हैं। प्रश्न उठता है कि काशिका यदि एक ही व्यक्ति की कृति होती तो सम्भवतः दोनों स्थानों के उदाहरणों में भिन्नता न होती।
4. प्रकारे गुणवचनस्य [17] सूत्र पर काशिकाकार ने 'प्रकार' शब्द का अर्थ ''प्रकारो भेदः सादृश्यं च'' लिखा है। यहां पर काशिकाकार ''प्रकार'' शब्द को भेद तथा सादृश्य का पर्यायवाची मान रहे हैं। इसके विपरीत ''प्रकार वचने जातीयर्'' [18] सूत्र पर काशिका में ही 'प्रकार' शब्द का अर्थ 'सामान्यस्य भेदको विशेषः प्रकारः'' लिखा है। यहां पर सादृश्य अर्थ नहीं लिया गया है। अतः पंचम अध्याय तथा अष्टम अध्याय के कर्त्ता भिन्न–भिन्न प्रतीत होते हैं। एवमेव सूत्र 8/1/12/, 5/3/69 में भी भिन्नता प्राप्त होती है।

इससे प्रतीत होता है कि प्रथम अध्याय का वृत्तिकार सप्तम–अष्टम अध्याय के वृत्तिकार से भिन्न हैं। उपर्युक्त सभी उदाहरणों द्वारा काशिकावृत्ति दो व्यक्तियों की रचना प्रतीत होती है।

काशिका से प्राचीन तथा अर्वाचीन वृत्तियां

महाभाष्य, भाष्यदीपिका, प्रदीप, पदमंजरी आदि ग्रन्थों के अध्ययन से इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि काशिका से पूर्व भी

पाणिनीय अष्टाध्यायी के सूत्रों पर अनेक वृत्तियां बन चुकी थीं। आचार्य भर्तृहरि द्वारा कहे गये विग्रहभेदं प्रतिपन्ना वृत्तिकाराः [19] से जहां यह संकेत मिलता है कि उनसे पूर्व भी अनेक वृत्तिकार हो चुके थे, वहीं यह भी स्पष्ट हो रहा है कि इन वृत्तिकारों में आपस में मतभेद भी था। काशिकाकार ने भी अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में किसी वृत्ति का उल्लेख किया है। [20] जिसका उन्होंने स्वयं भी आश्रय लिया है। एक अन्य सूत्र ''कस्कादिषु च'' 8/3/48 पर काशिकाकार ने फिर से वृत्ति का उल्लेख किया है। [21]

काशिकाकार से पूर्व अष्टाध्यायी पर लिखी अनेक वृत्तियां

संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रो. हरिनारायण तिवारी ने महाभाष्य की ''ज्योत्सना'' नामक व्याख्या में पाणिनि–प्रणीत अष्टाध्यायी के वृत्तिकारों की एक सूची दी है जिसमें 36 आचार्यों के नाम उल्लिखित हैं, साथ ही नौ अन्य वृत्तियां भी उपलब्ध होती हैं, परन्तु उनके कर्त्ता का नाम अज्ञात है ऐसा लिखा है। [22]

अष्टाध्यायी के वृत्तिकार			
1 पाणिनि	2 श्वोभूति	3 व्याडि	4 कुणि
5 माथुर	6 वररूचि	7 देवनन्दी	8 चुल्लिभट्टि
9 निर्लूर	10 चूर्णि	11 जयादित्य	12 वामन
13 भागवृत्ति	14 भर्त्रीश्वर	15 जयन्त भट्ट	16 केशव
17 इन्दुमित्र	18 मैत्रेय रक्षित	19 पुरुषोत्तमदेव	20 शरणदेव
21 भट्टोजिदीक्षित	22 अप्ययदीक्षित	23 नीलकण्ठ वाजपेयी	24 अन्नम्भट्ट
25 विश्वेश्वर सूरी	26 गोपालकृष्ण शास्त्री	27 गोकुलचनेद्र	28 ओरभट्ट
29 दयानन्द सरस्वती	30 अप्पननैनार्य	31 नारायण सूधी	32 रूद्रधर
33 उदयन	34 उदयशंकरभट्ट	35 रामचन्द्र	36 सदानन्दनाथ

काशिका की अभिनव वृत्तियां

पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपने व्याकरण शास्त्र के इतिहास में काशिका से उत्तरवर्ती भागवृत्ति आदि 30 अन्य वृत्तियों के नाम गिनाएं हैं। [23] इनमें से आजकल प्रकाशित ग्रन्थ के रूप में पुरुषोत्तमदेव की ''भाषावृत्ति'', भट्टोजिदीक्षित का ''शब्दकौस्तुभ'', अन्नंभट्ट की ''मिताक्षरी'', विश्वेश्वरसूरी की ''व्याकरण सिद्धान्त सुधानिधि'', ओरभट्ट की ''व्याकरणदीपिका'', तथा स्वामी दयानन्द का ''अष्टाध्यायी–भाष्य'' ही सम्पूर्ण या खण्डित रूप में इस समय उपलब्ध है। शेष वृत्तियों में कुछ के हस्तलेख विद्यमान हैं तथा कुछ के केवल संकेत मिलते हैं। [24] प्रो. हरिनारायण तिवारी के अनुसार अष्टाध्यायी पर पांच–छः वृत्तिग्रन्थ आधुनिक काल में भी लिखे गये हैं। इनमें श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासुकृत अष्टाध्यायी भाष्य (प्रथमावृत्ति) सबसे प्रमुख है। इसमें प्रतिसूत्र पदच्छेद, विभक्ति, समासविग्रह, अनुवृत्ति, अर्थ, उदाहरण और उदाहरण की साधनिका का निर्देश भी किया गया है। साथ ही सुविधा के लिए हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। [25]

काशिकावृत्ति का वैशिष्ट्य

संसार के समस्त साहित्य में संस्कृत–भाषा का विशालतम साहित्य है। इसका मूल कारण इसका सर्वाङ्गपूर्ण होना और साहित्य के प्रत्येक अंग–काव्य, नाटक, दर्शन, व्याकरणादि पर अनेक टीकाओं, भाषाओं और वृत्तियों का उपलब्ध होना है। वैसे तो पाणिनीय व्याकरण से पूर्व तथा पाणिनीय व्याकरण पर कई वृत्तियां लिखी गईं परन्तु जयादित्य–वामन ने जो वृत्ति लिखी, उस वृत्ति में जो विशेषताएं समाविष्ट कीं, उस काशिका के प्रकाश के आगे अन्य सब वृत्तियां कान्ति–हीन हो गयीं। हरदत्त का कथन है कि प्राचीन वृत्तियों में इष्टियां नहीं थीं [26] जो केवल काशिका में ही उपलब्ध होतीं हैं। काशिकाकार ने काशिका में ''इष्ट्युपसंख्यानवती शुद्धगणा विवृतगूढसूत्रार्था'' कहकर काशिका की विशेषता की ओर संकेत किया है। हरदत्त ने उपसंख्यान शब्द से वक्तव्यादि का ग्रहण भी किया है। [27] हरदत्त का कथन है कि पूर्ववृत्तियों में गणपाठ नहीं था, शुद्धगणा का होना भी काशिका की अन्य विशेषता है।

क. सूत्रार्थ की प्रधानता

काशिकाकार ने अपने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही ''इष्ट्युपसंख्यानवती शुद्धगणा विवृतगूढसूत्रार्था'' कहकर स्वयं ही निर्देश कर रहे हैं कि काशिका में सूत्रों के गूढ अर्थों को भली–भांति स्पष्ट किया गया है। सूत्रार्थ की प्रधानता काशिका की अन्यतम विशेषता है। काशिका में सूत्रों की अनुवृत्ति का भी निर्देश वृत्ति में है।

ख. अनुवृत्ति

काशिकाकार ने वृत्ति के विषय में अत्यन्त सावधानी से काम लिया है। अधिकतर सूत्रों में उन्होंने स्पष्ट रूप में ''इत्यनुवर्तते इति नानुवर्तते'' पदों द्वारा सूत्रों या सूत्रांशों की अनुवृत्ति की प्रवृत्ति तथा निर्वृत्ति स्पष्ट की है। इस विषय में 6/1/20 से 6/1/35 तक सोलह सूत्रों में से ग्यारह सूत्रों पर उन्होंने स्पष्ट में ''इत्यनुवर्तते'' इति नानुवर्तते आदि पदों द्वारा अनुवृत्ति के विषय को स्पष्ट किया है। इसी वैशिष्ट्य के कारण ''काशिका'' पूर्ववर्ती–उत्तरवर्ती वृत्तियों में सर्वोच्च स्थान पर आसीन है।

ग. विग्रह–पदच्छेद

यद्यपि काशिकार ने अधिकांश सूत्रों का विग्रह नहीं किया है फिर भी काशिका में अनेक सूत्रों का विग्रह [28] पाए जाने से स्पष्ट है कि इस ओर भी काशिकाकार का ध्यान था काशिकाकार ने विग्रह के साथ–साथ सूत्रों का पदच्छेद भी वृत्तियों में दिखलाया है। [29]

घ. उदाहरण

उदाहरण के बिना तो सभी ग्रन्थ प्रायः अधूरे ही रह जाते हैं। काशिका को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने हेतु काशिकाकार ने लगभग प्रत्येक सूत्रों में उदाहरण भी दिये हैं। मूर्धाभिषिक्तमिति सर्ववृत्तिषूदाहृतत्वात् [30] कैयट के इस कथन से ध्वनित होता है कि कुछ उदाहरण समान रूप में भी सभी वृत्तिकारों द्वारा उदाहृत होते थे।

ङ. प्रत्युदाहरण

काशिकाकार ने कुछ ही सूत्रों को छोडकर प्रायः सर्वत्र प्रत्युदाहरण भी साथ–साथ ही दिये हैं। ''कस्कादिषु च'' सूत्र पर उन्होंने लिखा है– ''भाष्ये वृत्तौ च नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य'' इत्यत्र ''परमसर्पिः कुण्डिका इत्येतदेव प्रत्युदाहरणम्''। काशिकाकार ने 8/3/45 पर स्वयं भी यही प्रत्युदाहरण दिया है। [31]

च. इष्टियां

''श्रुयजिषिस्तुभ्यः करणे'' वार्तिक (3.3.95) द्वारा करण अर्थ में ईष् धातु से ''क्तिन्'' प्रत्यय करके इष्टि शब्द सिद्ध होता है। इष् धातु से निष्पन्न ''इष्टि'' शब्द का विग्रह भाष्यकार ने इस प्रकार किया है– ''इष्यतेऽनयेति इष्टिः''। [32] हरदत्त ने इष्टि के इसी अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि सूत्र से असंगृहीत कार्य का जिससे ग्रहण हो उसे ''इष्टि'' कहते हैं। अतः स्पष्ट है कि सूत्रों तथा वार्त्तिकों के द्वारा भी असंगृहीत कार्यों के सम्पादनार्थ उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा चाहे गये नियम ''इष्टि''है। इस प्रकार काशिकाकार

ने इष्टियों का प्रयोग कर काशिका को अपने पूर्ववर्ती वृत्तियों से सर्वथा नूतन एवं श्रेष्ठ बनाए रखा है।

छ. उपसंख्यान

काशिकाकार ने काशिका की विशेषता बतलाते समय उसे ''उपसंख्यानवती'' कहा है। [33] हरदत्त ने ''उपसंख्यान'' पद से वक्तव्य का ग्रहण किया है। [34] काशिका में अधिकतर वार्तिकों के अन्त में प्रायः ''वक्तव्यम्'' या ''उपसंख्यानम्'' जुडा हुआ है। डा. राम सुरेश त्रिपाठी का विचार है कि काशिकाकार से पूर्व ''वक्तव्य'' एवं ''वार्तिक'' पृथक–पृथक थे परन्तु काशिकाकार ने वक्तव्यों तथा वार्तिकों को मिला दिया है। [35]

ज. वार्त्तिक

आचार्य कात्यायन द्वारा अष्टाध्यायी के सूत्रों पर लिखित उक्तानुक्तदुरुक्त विचारों को वार्त्तिक कहा जाता है। काशिकाकार ने कात्यायन के सभी वार्तिकों पर गहनता से विचार किया है साथ ही काशिका में अनेक वार्त्तिक ऐसे हैं जो कि भाष्य में नहीं पाये जाते। ये वार्त्तिक या तो पूर्वाचार्यों के हैं या फिर काशिकाकार ने स्वयं ही इनका निर्माण किया होगा। डा. धर्मेन्द्र कुमार के अनुसार काशिका में लगभग 37 वार्त्तिक ऐसे हैं जो भाष्य से अतिरिक्त हैं। [36] यथा –'अदेः प्रतिषेधो वक्तव्यः'। इस प्रकार के वचन काशिकाकार ने वार्त्तिक की शैली में ही लिखे हैं तथा उनके उदाहरण भी अन्य वार्त्तिकों की तरह ही दिये हैं। अतः इन वचनों को भी काशिकाकार निर्मित वार्त्तिक मानना चाहिए।

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त काशिका की एक अन्य अद्भूत विशेषता यह है कि इसमें अपने पूर्ववर्ती वृत्तियों, भाष्य तथा अन्य ग्रन्थों के सार को भी समाविष्ट कर लिया है। काशिका से पूर्ववर्ती वृत्तियां तो भाष्य से पूर्वपरवर्ती होने के कारण इन विशेषताओं से न्यून थीं हीं, काशिका से उत्तरवर्ती वृत्तियों ने भी इस प्रकार के सार संग्रह का प्रयत्न नहीं किया है। इन्हीं विशेषताओं के कारण काशिका को पूर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती वृत्तियों की अपेक्षा विशेष गौरव प्राप्त है।

सन्दर्भ

1. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
   शक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।
   तस्मात् सांगमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।। पाणिनीय शिक्षा।
2. काशिकावृत्ति, मंगलाचरण ।
3. अष्टाध्यायी 3/3/94 ।
4. काशिका विवरण पंजिका ।
5. पदमंजरी, भाग 1, पृ. 4 ।
6. अष्टाध्यायी 4/2/116।
7. काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन, पृ. 56।
8. इष्ट्युपसंख्यानवती शुद्धगणा विवृतगूढसूत्रार्था।
   व्युत्पन्नरूपसिद्धिर्वृत्तिरियं काशिका नाम। काशिकावृत्ति, मंगलाचरण ।
9. भाषावृत्त्यर्थविवृति, 8/4/62 ।
10. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास भाग–1
11. परिभाषावृत्ति, प्राक्कथन, पृष्ठ–2
12. काशिकावृत्ति, 2/1/68
13. काशिकावृत्ति, 6/2/2
14. काशिकावृत्ति, 2/1/40
15. काशिकावृत्ति, 6/2/33
16. काशिकावृत्ति, 2/1/11
17. काशिकावृत्ति, 8/1/12
18. काशिकावृत्ति, 5/3/69
19. काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन, पृ. 2।
20. वृत्तौ भाष्ये तथा धातुनामपारायणादिषु, काशिका, पृ. 1, श्लोक–1।
21. भाष्ये वृत्तौ च नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य, कस्कादिषु च, काशिकावृत्ति ।
22. व्याकरण महाभाष्य, पृ. सं. 42।
23. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास भाग–1, पृ. 432–462
24. वही।
25. वृत्त्यन्तरेषु सूत्राण्येव व्याख्यायन्ते। इयं पुनरिष्ट्यादिमती, पदमंजरी, पृ. 5, भाग–1।
26. वही।
27. सूत्रेणासंग्रहीतं लक्ष्यं येन संगृह्यते तदुपलक्षणम्।
    इष्ट्युपसंख्यानग्रहणम्। तेन वक्तव्यादीनामपि ग्रहणम्। पदमंजरी, भाग–1, पृ. 5,।
28. काशिका 1/1/10, 14, 26
29. काशिका 1/1/11, पृ. 10। ''ईत्, ऊत् एत् इत्येवमन्तम्।
30. प्रदीप 1/1/57, पृ. 430
31. काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन।
32. महाभाष्य, पृ. 5, भाग–1।
33. इष्ट्युपसंख्यानवती शुद्धगणा विवृतगूढसूत्रार्था, काशिकावृत्ति, श्लोक–2 ।
34. पदमंजरी, पृ. 5, भाग–1।
35. काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन।
36. काशिका वार्त्तिक व्याख्या, पृ. 157।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i. अष्टाध्यायी, पाणिनि, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ, 1981।
ii. काशिकावृत्ति (न्यासपदम४जरी सहित), वामन–जयादित्य, द्वारिका प्रसाद शुक्ल, सुधी
iii. प्रकाशन, वाराणसी, 1983।
iv. काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन, रघुवीर वेदालंकार, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली, 1977।
v. काशिका वार्त्तिक व्याख्या, धर्मेन्द्र कुमार, त्रिवेणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996।
vi. पदमंजरी, हरदत्त मिश्र, संस्कृत परिषद् उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 1981।
vii. भाषावृत्ति, द्वारकाप्रसाद शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी, 1971।
viii. परिभाषावृत्ति, दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, 1946
ix. पाणिनीय शिक्षा, पाणिनि, गुरु प्रसाद शास्त्री, भार्गव पुस्तकालय, गायघाट वाराणसी,
x. वि. सं. 2005।
xi. वार्तिककार कात्यायन, नरेश बत्रा, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली, 2009।
xii. व्याकरण महाभाष्य, हरिनाराायण तिवारी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।
xiii. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, युधिष्ठिर मीमांसक, भारतीय प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
xiv. अजमेर, 1983।